









## हात्सों की हट

बंगल ट्रेन त्रासदी से सबक सीखें



संजय त्यागी 'महादेव'

पश्चिम बंगल के दाखिलिंग जनपद में कंचनजंगा एक्सप्रेस को मालगाड़ी द्वारा पीछे से टकर मारे जाने से हुई अति बताती है कि बीते वर्ष ऑडिशा में कोरोनामैल एक्सप्रेस के भीषण हादसे से हमें कोई सबक नहीं सीखी। कंचनजंगा जाहीर है और तालिस से अधिक यात्री चालत हो गए हैं। उल्लेखनीय है कि बीते साल रेलवे इतिहास की बड़ी दुर्घटनाओं में शामिल कोरोनामैल एक्सप्रेस और दो अन्य ट्रेनों में हुई टकर में 290 से अधिक लोगों की जान चली गई थी।

उल्लेखनीय है कि कंचनजंगा द्वारा दो में मरने वालों में मालगाड़ी के चालक व सहाचालक शाश्वत लिए गए हैं। हालांकि दुर्घटना का वास्तविक कारण जांच के बाद ही पाल चाला गया जा रहा है कि रानीपत्रा रेलवे रेसेन व छत्तर घाट जंक्शन के बीच त्वचालित सिंगलिंग प्राणाली दुर्घटना से तीन दर्दे पहले से ही खबर थी। इस्तेमाल की तरह भूमतों के परियों को दस-दस लाख का मुआवाया देने की घोषणा हुई है। साथ ही दुर्घटना की वजह तलाशने और जवाबदेही तय करने की बात कही जा रही है। पहले उम्मीद यांगी थी कि बालासोर जासदी से सबक लेकर रेल दुर्घटनाओं को रोकने की दिशा में कारोबार करम उडाए जायें, जबकि जमीनी स्तर पर हालात बदलने जरूर नहीं आ रहे हैं। रेलवे तंत्र में कोताही का नाम इस स्तर पर देखने की पिला था जबकि उडाए गए (पंजाब) के बीच त्वचालय सरकर निलोमाटर द्वारा तक एक मालगाड़ी बिना चालक के चलो गई थी। सौभाग्य की बात है कि इस ट्रेक पर किसी रेल के न आने से दुर्घटना टल गई थी। बहरहाल, कंचनजंगा एक्सप्रेस दुर्घटना के बाद राजनीतिक अरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला तेज हो गया है। बड़े चढ़कन बताया जा रहा है कि सत्ता विकाश में से किसका कार्यकाल में ज्यादा रेल दुर्घटनाएं हुईं। बहरहाल, रेल दुर्घटनाएं रोकने के लिये बनायी गई ट्रकर रोपी तंत्रीकार की जिक्रान्वयन को नियंत्रित करने पर यदि इसका क्रियावरण होता तो शाद इस दुर्घटना को टलाया जा सकता था।

सवाल यह है कि रेल मंत्रालय मालगाड़ी भूले के कारण होने वाली दुर्घटनाओं को टालने के लिए गंभीर पहल वर्षों नहीं करता। वर्षों रेल दुर्घटनाएं रोकना सत्ताधारी की प्राथमिकताओं में शामिल नहीं होता? जिस ट्रेन टकर बचाव प्रणाली 'कार्य' को चर्यापद्धति तरीके से जल्दी से लागू किया जाना चाहिए, था, उस पर कहुआ गति से काम करने हो रहा है। अब आप देंट्रून और जरूर नहीं आ रहे हैं। कहा जा रहा है कि यह पूर्वोत्तर मार्ग पर यदि इसका जरूरत इस बात की है कि देश में फस्ट ट्रेनों की चक्रांति व लैंपर्स के बजाय सामान्य गति की ट्रेनों की सुरक्षा की प्राथमिकता के आधार पर सुनिश्चित किया जाए। वर्षीय विषय का आरोप है कि रेलवे में रिकॉर्ड पहले लाई पांडे को नहीं भरा जा रहा है, जिससे रेलवे बढ़ी आवादी के बीच में सुरक्षित रेल सेवा उपलब्ध नहीं करा पा रहा है। अखिर हम इन हादसों से सबक कर लेंगे। निस्सदैदेह, रेल यात्राओं को दुर्घटनाओं से निपादन दर्शन के लिये बुनियादी ढांचे में सुधार व अधिक नियंत्रण की जरूरत है। हम अतिंत के हादसों से सबक लेकर परिचालन व्यवस्था के सुधारने का प्रयास करें। हादसों की जबाबदेही तय हो ताकि दुर्घटनाओं की पुनरुत्थानी रोकी जा सके। वक्र की जरूरत है कि दुर्घटनाओं को टालने के लिये, जितना जल्दी हो सके अधिक दबाव बाले इतावानों में 'कर्च' योजना को विकायात किया जाए। इसके अलावा पटरियों के रख-खाल के लिये अवार्टिंट फट का चिरता उपयोग किया जाए। साथ ही बुनियादी ढांचे में सुधार, दुर्घटनाओं को आधिकारिक करने की उपग्रहण तथा नई चुनियादी जाएं ताकि यह भी की रेलवे के आधिकारिकरण के लिये वित्तीय संसाधन जुटाए जाएं ताकि यह न कहा जा सके कि असुनिश्चित परियों पर लवर संचालन प्रणाली दुर्घटनाओं की वजह बरही है। दुर्घटनाओं का सिलसिला तभी यथागती की सुरक्षा रेलवे करकरे के बाद आधिकारिक व्यवस्था के बाद राजनीतिक अरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला तेज हो गया है। बड़े चढ़कन बताया जा रहा है कि सत्ता विकाश में से किसका कार्यकाल तभी यथागती की जरूरत है। हम अतिंत के हादसों से सबक लेकर परिचालन व्यवस्था के सुधारने का प्रयास करें। हादसों की जबाबदेही तय हो ताकि दुर्घटनाओं की पुनरुत्थानी रोकी जा सके। वक्र की जरूरत है कि दुर्घटनाओं को टालने के लिये, जितना जल्दी हो सके अधिक दबाव बाले इतावानों में 'कर्च' योजना को विकायात किया जाए। इसके अलावा पटरियों के रख-खाल के लिये अवार्टिंट फट का चिरता उपयोग किया जाए। साथ ही बुनियादी ढांचे में सुधार, दुर्घटनाओं को आधिकारिक करने की उपग्रहण तथा नई चुनियादी जाएं ताकि यह भी की रेलवे के आधिकारिकरण के लिये वित्तीय संसाधन जुटाए जाएं ताकि यह न कहा जा सके कि असुनिश्चित परियों पर लवर संचालन प्रणाली दुर्घटनाओं की वजह बरही है। दुर्घटनाओं का सिलसिला तभी यथागती की सुरक्षा रेलवे करकरे के बाद आधिकारिक व्यवस्था के बाद राजनीतिक अरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला तेज हो गया है। बड़े चढ़कन बताया जा रहा है कि सत्ता विकाश में से किसका कार्यकाल तभी यथागती की जरूरत है। हम अतिंत के हादसों से सबक लेकर परिचालन व्यवस्था के सुधारने का प्रयास करें। हादसों की जबाबदेही तय हो ताकि दुर्घटनाओं की पुनरुत्थानी रोकी जा सके। वक्र की जरूरत है कि दुर्घटनाओं को टालने के लिये, जितना जल्दी हो सके अधिक दबाव बाले इतावानों में 'कर्च' योजना को विकायात किया जाए। इसके अलावा पटरियों के रख-खाल के लिये अवार्टिंट फट का चिरता उपयोग किया जाए। इस में उबर, विकायी और जेमेटो जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए अस्थायी लंचोंसे और प्रोजेक्ट-आधारित काम करने वाले भी शामिल हैं। ये नौकरियाँ लचीलापन प्रदान करती हैं, लेकिन इन लोगों को पारंपरिक रोजगार से जुड़े हैं। जरूरत इस बात की है कि देश में फस्ट ट्रेनों की चक्रांति व लैंपर्स के बजाय सामान्य गति की ट्रेनों की सुरक्षा की प्राथमिकता के आधार पर सुनिश्चित किया जाए। वर्षीय विषय का आरोप है कि रेलवे में रिकॉर्ड पहले लाई पांडे को नहीं भरा जा रहा है, जिससे रेलवे बढ़ी आवादी के बीच में सुरक्षित रेल सेवा उपलब्ध नहीं करा पा रहा है। अखिर हम इन हादसों से सबक कर लेंगे। निस्सदैदेह, रेल यात्राओं को दुर्घटनाओं से निपादन दर्शन के लिये बुनियादी ढांचे में सुधार व अधिक नियंत्रण की जरूरत है। हम अतिंत के हादसों से सबक लेकर परिचालन व्यवस्था के सुधारने का प्रयास करें। हादसों की जबाबदेही तय हो ताकि दुर्घटनाओं की पुनरुत्थानी रोकी जा सके। वक्र की जरूरत है कि दुर्घटनाओं को टालने के लिये, जितना जल्दी हो सके अधिक दबाव बाले इतावानों में 'कर्च' योजना को विकायात किया जाए। इसके अलावा पटरियों के रख-खाल के लिये अवार्टिंट फट का चिरता उपयोग किया जाए। साथ ही बुनियादी ढांचे में सुधार, दुर्घटनाओं को आधिकारिक करने की उपग्रहण तथा नई चुनियादी जाएं ताकि यह भी की रेलवे के आधिकारिकरण के लिये वित्तीय संसाधन जुटाए जाएं ताकि यह न कहा जा सके कि असुनिश्चित परियों पर लवर संचालन प्रणाली दुर्घटनाओं की वजह बरही है। दुर्घटनाओं का सिलसिला तभी यथागती की सुरक्षा रेलवे करकरे के बाद आधिकारिक व्यवस्था के बाद राजनीतिक अरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला तेज हो गया है। बड़े चढ़कन बताया जा रहा है कि सत्ता विकाश में से किसका कार्यकाल तभी यथागती की जरूरत है। हम अतिंत के हादसों से सबक लेकर परिचालन व्यवस्था के सुधारने का प्रयास करें। हादसों की जबाबदेही तय हो ताकि दुर्घटनाओं की पुनरुत्थानी रोकी जा सके। वक्र की जरूरत है कि दुर्घटनाओं को टालने के लिये, जितना जल्दी हो सके अधिक दबाव बाले इतावानों में 'कर्च' योजना को विकायात किया जाए। इसके अलावा पटरियों के रख-खाल के लिये अवार्टिंट फट का चिरता उपयोग किया जाए। साथ ही बुनियादी ढांचे में सुधार, दुर्घटनाओं को आधिकारिक करने की उपग्रहण तथा नई चुनियादी जाएं ताकि यह भी की रेलवे के आधिकारिकरण के लिये वित्तीय संसाधन जुटाए जाएं ताकि यह न कहा जा सके कि असुनिश्चित परियों पर लवर संचालन प्रणाली दुर्घटनाओं की वजह बरही है। दुर्घटनाओं का सिलसिला तभी यथागती की सुरक्षा रेलवे करकरे के बाद आधिकारिक व्यवस्था के बाद राजनीतिक अरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला तेज हो गया है। बड़े चढ़कन बताया जा रहा है कि सत्ता विकाश में से किसका कार्यकाल तभी यथागती की जरूरत है। हम अतिंत के हादसों से सबक लेकर परिचालन व्यवस्था के सुधारने का प्रयास करें। हादसों की जबाबदेही तय हो ताकि दुर्घटनाओं की पुनरुत्थानी रोकी जा सके। वक्र की जरूरत है कि दुर्घटनाओं को टालने के लिये, जितना जल्दी हो सके अधिक दबाव बाले इतावानों में 'कर्च' योजना को विकायात किया जाए। इसके अलावा पटरियों के रख-खाल के लिये अवार्टिंट फट का चिरता उपयोग किया जाए। साथ ही बुनियादी ढांचे में सुधार, दुर्घटनाओं को आधिकारिक करने की उपग्रहण तथा नई चुनियादी जाएं ताकि यह भी की रेलवे के आधिकारिकरण के लिये वित्तीय संसाधन जुटाए जाएं ताकि यह न कहा जा सके कि असुनिश्चित परियों पर लवर संचालन प्रणाली दुर्घटनाओं की वजह बरही है। दुर्घटनाओं का सिलसिला तभी यथागती की सुरक्षा रेलवे करकरे के बाद आधिकारिक व्यवस्था के बाद राजनीतिक अरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला तेज हो गया है। बड़े चढ़कन बताया जा रहा है कि सत्ता विकाश में से किसका कार्यकाल तभी यथागती की जरूरत है। हम अतिंत के हादसों से सबक लेकर परिचालन व्यवस्था के सुधारने का प्रयास करें। हादसों की जबाबदेही तय हो ताकि दुर्घटनाओं की पुनरुत्थानी रोकी जा सके। वक्र की जरूरत है कि दुर्घटनाओं को टालने के लिये, जितना जल्दी हो सके अधिक दबाव बाले इतावानों में 'कर्च' योजना को विकायात किया जाए। इसके अलावा पटर



